डिजिटल युग में भारतीय संगीत का परिवर्तन: ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों की भूमिका का समीक्षा अध्ययन

***डॉ. मधु बजाज**

सारांश

इक्कीसवीं शताब्दी में डिजिटल प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने संचार, मनोरंजन तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। संगीत उद्योग भी इस परिवर्तन से गहराई से प्रभावित हुआ है। भारतीय संगीत, जो लंबे समय तक रेडियो, ग्रामोफोन, कैसेट, कॉम्पैक्ट डिस्क तथा टेलीविजन जैसे पारंपरिक माध्यमों पर आधारित था, अब डिजिटल मंचों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर उपलब्ध हो गया है। ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों ने संगीत के उत्पादन, वितरण और उपभोग की प्रक्रियाओं को पुनर्परिभाषित करते हुए संगीत उद्योग के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आयामों को प्रभावित किया है। प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल युग में भारतीय संगीत के परिवर्तन का विश्लेषण करना तथा ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों की भूमिका का मूल्यांकन करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डिजिटल मंचों ने संगीत तक पहुँच को सरल बनाया, स्वतंत्र कलाकारों को नए अवसर प्रदान किए तथा क्षेत्रीय संगीत को व्यापक पहचान दिलाई। साथ ही कॉपीराइट, राजस्व वितरण, एल्गोरिदमिक पक्षपात तथा सांस्कृतिक एकरूपता जैसी चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि डिजिटल मंचों ने भारतीय संगीत उद्योग को अधिक लोकतांत्रिक, वैश्विक तथा तकनीकी रूप से उन्नत बनाया है, किन्तु इसके साथ अनेक संरचनात्मक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जिन पर गंभीर चिंतन और नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: डिजिटल संगीत, भारतीय संगीत, ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्म, स्ट्रीमिंग सेवाएँ, स्वतंत्र कलाकार, डिजिटल मीडिया, संगीत उद्योग।

1. परिचय

संगीत मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन और प्रभावशाली कलात्मक अभिव्यक्तियों में से एक है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक संवाद का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। भारतीय संगीत परंपरा अपनी विविधता, समृद्धता तथा ऐतिहासिक गहराई के कारण विश्वभर में विशिष्ट पहचान रखती है। भारतीय संगीत में शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, भक्ति संगीत, फिल्म संगीत तथा समकालीन लोकप्रिय संगीत जैसी अनेक विधाएँ शामिल हैं, जो समय के साथ बदलती सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप विकसित होती रही हैं (रानाडे, 2011; शर्मा, 2012)।

बीसवीं शताब्दी में तकनीकी विकास ने संगीत उद्योग को नई दिशा प्रदान की। ग्रामोफोन रिकॉर्ड, रेडियो, कैसेट, कॉम्पैक्ट डिस्क (सीडी) तथा टेलीविजन जैसे माध्यमों ने संगीत को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में आकाशवाणी तथा दूरदर्शन जैसे संस्थानों ने संगीत के प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया, जिसके परिणामस्वरूप संगीत का दायरा सीमित अभिजात वर्ग से निकलकर सामान्य जनता तक विस्तृत हुआ (मिडलटन, 2011)। बाद के वर्षों में कैसेट उद्योग और फिल्म संगीत के विस्तार ने भारतीय संगीत बाजार को और अधिक व्यापक बनाया।

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में इंटरनेट और डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास ने संगीत उद्योग में अभूतपूर्व परिवर्तन उत्पन्न किया। डिजिटल तकनीकों ने संगीत को भौतिक माध्यमों की सीमाओं से मुक्त कर दिया तथा संगीत के निर्माण, वितरण और उपभोग की प्रक्रियाओं को पुनर्गठित किया (मॉरिस एवं पॉवर्स, 2015)। स्मार्टफोन, मोबाइल इंटरनेट तथा क्लाउड तकनीक के विस्तार ने संगीत सुनने की पारंपरिक आदतों को बदल दिया। अब श्रोता किसी निश्चित समय या स्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अपनी सुविधा और रुचि के अनुसार किसी भी समय संगीत का चयन और श्रवण कर सकते हैं (फर्नांडीस, 2019)।

भारतीय संगीत उद्योग में यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है। भारत विश्व के सबसे बड़े डिजिटल उपभोक्ता बाजारों में से एक है, जहाँ इंटरनेट उपयोगकर्ताओं और स्मार्टफोन धारकों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। सस्ते डेटा और मोबाइल तकनीक की उपलब्धता ने ऑनलाइन संगीत मंचों के उपयोग को व्यापक बनाया है (कुमार, 2016)। परिणामस्वरूप संगीत उपभोग की प्रक्रिया तेजी से डिजिटल माध्यमों की ओर स्थानांतरित हुई है। वर्तमान समय में बड़ी संख्या में श्रोता पारंपरिक रेडियो, सीडी अथवा टेलीविजन की अपेक्षा ऑनलाइन मंचों के माध्यम से संगीत सुनना पसंद करते हैं (सिंह, 2018)।

ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों ने संगीत उद्योग की संरचना में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। पहले संगीत उद्योग में सफलता प्राप्त करने के लिए कलाकारों को रिकॉर्ड कंपनियों, संगीत निर्माताओं तथा प्रसारण संस्थानों पर निर्भर रहना पड़ता था। डिजिटल मंचों के उदय के बाद कलाकारों को अपनी रचनाओं को सीधे श्रोताओं तक पहुँचाने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस परिवर्तन ने स्वतंत्र संगीतकारों (Independent Artists) के लिए नए अवसरों का सृजन किया है तथा संगीत उद्योग में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया है (शर्मा एवं वर्मा, 2017; चौधरी, 2019)। आज अनेक कलाकार बिना किसी बड़े संगीत लेबल के सहयोग के भी व्यापक लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं।

डिजिटल परिवर्तन ने भारतीय संगीत की सांस्कृतिक विविधता को भी नई पहचान प्रदान की है। पहले राष्ट्रीय स्तर पर मुख्यतः हिंदी फिल्म संगीत का वर्चस्व दिखाई देता था, जबकि वर्तमान समय में पंजाबी, भोजपुरी, राजस्थानी, मराठी, बंगाली, तमिल, तेलुगु तथा अन्य क्षेत्रीय संगीत शैलियों को भी व्यापक श्रोतावर्ग प्राप्त हो रहा है। डिजिटल मंचों ने इन संगीत परंपराओं को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है (सिंह, 2018)। इससे भारतीय संगीत की बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ता मिली है।

हालाँकि डिजिटल मंचों ने संगीत उद्योग को अनेक अवसर प्रदान किए हैं, फिर भी इनके साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। कॉपीराइट संरक्षण, कलाकारों की आय, राजस्व वितरण, डेटा-

आधारित एल्गोरिदमिक अनुशंसाएँ तथा सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिन पर निरंतर चर्चा हो रही है (मॉरिस एवं पॉवर्स, 2015; फर्नांडीस, 2019)। डिजिटल मंचों की बढ़ती लोकप्रियता ने संगीत उद्योग के आर्थिक ढाँचे को परिवर्तित किया है, किंतु इसके लाभ सभी कलाकारों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाए हैं। यही कारण है कि डिजिटल संगीत उद्योग के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का समग्र अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

वर्तमान अध्ययन इसी आवश्यकता की पृष्ठभूमि में तैयार किया गया है। यह समीक्षा अध्ययन डिजिटल युग में भारतीय संगीत उद्योग में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करता है तथा ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य केवल डिजिटल तकनीकों के प्रभावों का वर्णन करना नहीं है, बल्कि यह समझना भी है कि इन तकनीकों ने भारतीय संगीत की संरचना, पहुँच, अर्थव्यवस्था तथा सांस्कृतिक स्वरूप को किस प्रकार प्रभावित किया है।

1.1.अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. भारतीय संगीत उद्योग पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रभावों का अध्ययन करना।
2. ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. श्रोताओं की बदलती संगीत-उपभोग प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करना।
4. स्वतंत्र कलाकारों एवं क्षेत्रीय संगीत के विकास में डिजिटल मंचों के योगदान का अध्ययन करना।
5. डिजिटल संगीत उद्योग की चुनौतियों एवं संभावनाओं का विश्लेषण करना।

2. भारतीय संगीत और डिजिटल परिवर्तन : वैचारिक परिप्रेक्ष्य

डिजिटल युग ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है और संगीत उद्योग भी

इससे अछूता नहीं रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने संगीत के निर्माण, वितरण, विपणन तथा उपभोग की प्रक्रियाओं को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। डिजिटल परिवर्तन केवल तकनीकी बदलाव नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक संरचनाओं में होने वाले व्यापक परिवर्तनों का भी संकेतक है। संगीत उद्योग के संदर्भ में डिजिटल परिवर्तन का अर्थ उन प्रक्रियाओं से है जिनके माध्यम से संगीत उत्पादन और वितरण की पारंपरिक प्रणालियाँ डिजिटल तकनीकों पर आधारित नई प्रणालियों में परिवर्तित हुई हैं (मिडलटन, 2011)।

संगीत उद्योग का इतिहास यह दर्शाता है कि तकनीकी नवाचारों ने सदैव संगीत के स्वरूप और उसके प्रसार को प्रभावित किया है। ग्रामोफोन रिकॉर्ड से लेकर रेडियो, कैसेट, कॉम्पैक्ट डिस्क और टेलीविजन तक प्रत्येक तकनीकी माध्यम ने संगीत के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तथापि इंटरनेट और डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव इन सभी माध्यमों की तुलना में अधिक व्यापक और गहरा माना जाता है, क्योंकि इसने संगीत उद्योग की संपूर्ण संरचना को पुनर्गठित कर दिया है (मॉरिस एवं पॉवर्स, 2015)। डिजिटल मंचों ने संगीत को भौतिक माध्यमों से मुक्त करते हुए उसे वैश्विक स्तर पर तत्काल उपलब्ध बना दिया है।

डिजिटल संगीत की अवधारणा केवल संगीत को डिजिटल स्वरूप में संग्रहित करने तक सीमित नहीं है। यह संगीत के उत्पादन, वितरण, उपभोग तथा प्रचार की संपूर्ण प्रक्रिया को समाहित करती है। डिजिटल संगीत के अंतर्गत ऑडियो स्ट्रीमिंग, ऑनलाइन डाउनलोड, क्लाउड आधारित संग्रहण, सोशल मीडिया प्रचार तथा एल्गोरिदमिक अनुशंसा प्रणालियाँ सम्मिलित हैं। इन तकनीकों ने संगीत उद्योग को अधिक गतिशील, सहभागितापूर्ण तथा उपभोक्ता-केंद्रित बनाया है (फर्नांडीस, 2019)।

डिजिटल मीडिया के विकास ने संगीत उपभोग की प्रकृति को भी परिवर्तित किया है। पारंपरिक माध्यमों में श्रोताओं के पास सीमित विकल्प उपलब्ध होते थे और वे मुख्यतः प्रसारण संस्थानों अथवा रिकॉर्ड कंपनियों द्वारा निर्धारित सामग्री पर निर्भर रहते थे। इसके विपरीत डिजिटल मंचों ने

श्रोताओं को संगीत चयन की स्वतंत्रता प्रदान की है। आज श्रोता अपनी पसंद, समय और आवश्यकता के अनुसार संगीत का चयन कर सकते हैं तथा व्यक्तिगत प्लेलिस्ट तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार संगीत उपभोग की प्रक्रिया अधिक व्यक्तिगत और सहभागितापूर्ण बन गई है (एरिक्सन एवं जोहानसन, 2018)।

डिजिटल युग की एक प्रमुख विशेषता "ऑन-डिमांड संस्कृति" (On-Demand Culture) का विकास है। इस संस्कृति में उपभोक्ता अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी समय सामग्री का उपयोग कर सकता है। संगीत उद्योग में यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि अब श्रोताओं को किसी निश्चित प्रसारण समय या भौतिक माध्यम की आवश्यकता नहीं होती। वे इंटरनेट के माध्यम से अपनी पसंद का संगीत तुरंत सुन सकते हैं। यह परिवर्तन संगीत उद्योग की आर्थिक संरचना तथा विपणन रणनीतियों को भी प्रभावित करता है (मॉरिस एवं पॉवर्स, 2015)।

भारतीय संगीत उद्योग के संदर्भ में डिजिटल परिवर्तन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। भारत एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ संगीत की अनेक परंपराएँ विद्यमान हैं। लंबे समय तक मुख्यधारा का संगीत उद्योग सीमित भाषाओं और शैलियों तक केंद्रित रहा, किंतु डिजिटल मंचों ने इस स्थिति को बदल दिया है। आज क्षेत्रीय भाषाओं में निर्मित संगीत भी व्यापक स्तर पर उपलब्ध है तथा उसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय श्रोताओं द्वारा सुना जा रहा है (सिंह, 2018)। इस प्रकार डिजिटल मंच भारतीय सांस्कृतिक विविधता को अभिव्यक्ति का नया अवसर प्रदान कर रहे हैं।

डिजिटल परिवर्तन ने कलाकार और श्रोता के संबंधों को भी पुनर्परिभाषित किया है। पारंपरिक संगीत उद्योग में कलाकारों और श्रोताओं के मध्य अनेक संस्थागत स्तर मौजूद थे, जैसे रिकॉर्ड कंपनियाँ, वितरक तथा प्रसारण संस्थान। डिजिटल मंचों ने इन मध्यस्थों की भूमिका को आंशिक रूप से कम कर दिया है। अब कलाकार सीधे अपने श्रोताओं से संवाद स्थापित कर सकते हैं, अपनी रचनाओं का प्रचार कर सकते हैं तथा प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं (शर्मा एवं वर्मा, 2017)। इस परिवर्तन ने संगीत उद्योग को अधिक लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया है।

स्वतंत्र संगीत (Independent Music) का उभार भी डिजिटल परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण परिणाम है। पहले स्वतंत्र कलाकारों के लिए व्यापक स्तर पर पहचान प्राप्त करना कठिन था, क्योंकि वितरण और प्रचार के संसाधन सीमित थे। डिजिटल मंचों के माध्यम से अब कलाकार अपनी रचनाओं को सीधे प्रकाशित कर सकते हैं तथा वैश्विक स्तर पर श्रोताओं तक पहुँच सकते हैं। चौधरी (2019) के अनुसार डिजिटल मंचों ने स्वतंत्र संगीत आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की है तथा संगीत उद्योग में रचनात्मक विविधता को बढ़ावा दिया है।

डिजिटल संगीत उद्योग का आर्थिक आयाम भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारंपरिक संगीत उद्योग मुख्यतः रिकॉर्ड और सीडी की बिक्री पर आधारित था, जबकि वर्तमान डिजिटल उद्योग स्ट्रीमिंग, सदस्यता सेवाओं तथा विज्ञापन आधारित राजस्व मॉडल पर निर्भर है। इस परिवर्तन ने संगीत उद्योग के आय स्रोतों को बदल दिया है। साथ ही कलाकारों, संगीत कंपनियों तथा डिजिटल मंचों के मध्य आर्थिक संबंधों को भी पुनर्गठित किया है (फर्नांडीस, 2019)। यद्यपि डिजिटल मंचों ने संगीत उद्योग के लिए नए आर्थिक अवसर उत्पन्न किए हैं, फिर भी राजस्व वितरण की असमानता एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

डिजिटल परिवर्तन का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम एल्गोरिदमिक संस्कृति (Algorithmic Culture) का विकास है। वर्तमान समय में अधिकांश ऑनलाइन संगीत मंच उपयोगकर्ताओं की पसंद और व्यवहार के आधार पर संगीत अनुशंसाएँ प्रदान करते हैं। एल्गोरिदम श्रोताओं के अनुभव को अधिक व्यक्तिगत बनाते हैं तथा उन्हें नई सामग्री तक पहुँचने में सहायता करते हैं (एरिक्सन एवं जोहानसन, 2018)। किंतु कुछ विद्वानों का मत है कि एल्गोरिदम लोकप्रिय सामग्री को अधिक बढ़ावा देते हैं, जिसके कारण कम लोकप्रिय अथवा पारंपरिक संगीत शैलियाँ अपेक्षाकृत कम दृश्यता प्राप्त कर पाती हैं। इस स्थिति का प्रभाव सांस्कृतिक विविधता पर पड़ सकता है।

डिजिटल परिवर्तन के सांस्कृतिक प्रभावों को समझना भी आवश्यक है। डिजिटल मंचों ने संगीत को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया है, बल्कि उसे सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक सहभागिता तथा सामुदायिक संवाद का साधन भी बना दिया है। सोशल मीडिया और डिजिटल

मंचों के माध्यम से संगीत का उपभोग सामूहिक अनुभव का रूप ले रहा है, जहाँ श्रोता संगीत को साझा करते हैं, उस पर प्रतिक्रिया देते हैं तथा डिजिटल समुदायों का निर्माण करते हैं (फैनकोर्ट, 2019)। इस प्रकार संगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि डिजिटल संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग बन गया है।

उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि डिजिटल परिवर्तन ने भारतीय संगीत उद्योग के स्वरूप को मूलभूत रूप से परिवर्तित किया है। इस परिवर्तन ने संगीत के निर्माण, वितरण, विपणन तथा उपभोग की प्रक्रियाओं को अधिक सुलभ, लोकतांत्रिक और वैश्विक बनाया है। साथ ही इसने नए आर्थिक अवसरों, सांस्कृतिक संभावनाओं तथा तकनीकी नवाचारों को जन्म दिया है। तथापि कॉपीराइट संरक्षण, राजस्व वितरण, एल्गोरिदमिक प्रभाव तथा सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण जैसी चुनौतियाँ भी इस परिवर्तन के साथ जुड़ी हुई हैं। इसलिए डिजिटल परिवर्तन को केवल तकनीकी प्रगति के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है।

3. भारतीय संगीत उद्योग पर ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों का प्रभाव : एक विश्लेषण

डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास ने भारतीय संगीत उद्योग की संरचना, कार्यप्रणाली तथा सांस्कृतिक स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों के उदय ने संगीत उत्पादन, वितरण, प्रचार तथा उपभोग की पारंपरिक प्रक्रियाओं को पुनर्परिभाषित किया है। उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल मंचों ने भारतीय संगीत उद्योग को अधिक सुलभ, वैश्विक तथा सहभागितापूर्ण बनाया है। साथ ही, इन मंचों ने संगीत उद्योग में नई संभावनाओं और चुनौतियों दोनों को जन्म दिया है।

ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों के आगमन से पूर्व भारतीय संगीत उद्योग मुख्यतः भौतिक माध्यमों तथा पारंपरिक प्रसारण प्रणालियों पर आधारित था। रिकॉर्ड कंपनियाँ संगीत उत्पादन और वितरण की प्रमुख नियंत्रक थीं तथा कलाकारों की सफलता काफी हद तक इन संस्थाओं पर निर्भर

करती थी। डिजिटल मंचों ने इस केंद्रीकृत संरचना को चुनौती दी और संगीत वितरण को अधिक लोकतांत्रिक बनाया (मिडलटन, 2011)। आज कलाकार अपनी रचनाओं को सीधे श्रोताओं तक पहुँचाने में सक्षम हैं, जिससे संगीत उद्योग में प्रतिस्पर्धा और विविधता दोनों में वृद्धि हुई है।

संगीत उत्पादन की प्रक्रिया में भी डिजिटल तकनीकों ने महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। पहले उच्च गुणवत्ता वाली रिकॉर्डिंग और संपादन के लिए महंगे स्टूडियो तथा तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता होती थी। वर्तमान समय में डिजिटल ऑडियो वर्कस्टेशन, कंप्यूटर आधारित रिकॉर्डिंग तकनीकों तथा ऑनलाइन सहयोगी उपकरणों ने संगीत निर्माण को अधिक सुलभ बना दिया है। इससे नए कलाकारों तथा छोटे निर्माताओं को भी संगीत निर्माण के क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर मिला है (फर्नांडीस, 2019)। परिणामस्वरूप संगीत उद्योग में रचनात्मक प्रयोगों और नवाचारों की संख्या में वृद्धि हुई है।

संगीत वितरण के क्षेत्र में डिजिटल मंचों का प्रभाव और भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पारंपरिक संगीत उद्योग में वितरण एक जटिल एवं महंगी प्रक्रिया थी, जिसमें रिकॉर्ड कंपनियों, वितरकों और विक्रेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। ऑनलाइन मंचों ने इस प्रक्रिया को सरल बना दिया है। अब संगीत को डिजिटल स्वरूप में तुरंत लाखों श्रोताओं तक पहुँचाया जा सकता है (मॉरिस एवं पॉवर्स, 2015)। इस परिवर्तन ने वितरण लागत को कम किया है तथा कलाकारों और श्रोताओं के बीच की दूरी को घटाया है।

डिजिटल मंचों ने संगीत उपभोग की प्रकृति को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। पहले श्रोता रेडियो प्रसारण, कैसेट अथवा सीडी के माध्यम से संगीत सुनते थे, जबकि वर्तमान समय में ऑन-डिमांड स्ट्रीमिंग सेवाएँ प्रमुख माध्यम बन चुकी हैं। श्रोता अपनी पसंद के अनुसार किसी भी समय संगीत का चयन कर सकते हैं। एरिक्सन एवं जोहानसन (2018) के अनुसार यह परिवर्तन संगीत उपभोग को अधिक व्यक्तिगत और सहभागितापूर्ण बनाता है। व्यक्तिगत प्लेलिस्ट, अनुशंसित गीत तथा उपयोगकर्ता-केंद्रित सामग्री चयन संगीत अनुभव को नई दिशा प्रदान करते हैं।

डिजिटल मंचों का एक महत्वपूर्ण प्रभाव स्वतंत्र कलाकारों (Independent Artists) के उभार के रूप में देखा जा सकता है। पारंपरिक संगीत उद्योग में कलाकारों को पहचान प्राप्त करने के लिए रिकॉर्ड कंपनियों तथा मीडिया संस्थानों पर निर्भर रहना पड़ता था। डिजिटल मंचों ने इस निर्भरता को कम किया है। अब कलाकार स्वयं अपनी रचनाओं को प्रकाशित कर सकते हैं, उनका प्रचार कर सकते हैं तथा श्रोताओं से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर सकते हैं (शर्मा एवं वर्मा, 2017)। चौधरी (2019) के अनुसार डिजिटल मंचों ने स्वतंत्र संगीत आंदोलन को नई गति प्रदान की है तथा संगीत उद्योग में रचनात्मक विविधता को बढ़ावा दिया है।

भारतीय संगीत उद्योग में क्षेत्रीय संगीत के विस्तार में भी ऑनलाइन मंचों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। लंबे समय तक राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी फिल्म संगीत का प्रभुत्व बना रहा, किंतु डिजिटल मंचों ने इस स्थिति में परिवर्तन लाया है। पंजाबी, भोजपुरी, राजस्थानी, मराठी, बंगाली, तमिल, तेलुगु तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के संगीत को अब व्यापक स्तर पर सुना जा रहा है। सिंह (2018) के अनुसार डिजिटल मंचों ने क्षेत्रीय संगीत को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे भारतीय संगीत की सांस्कृतिक विविधता को संरक्षण और विस्तार दोनों प्राप्त हुए हैं।

डिजिटल विपणन (Digital Marketing) ने भी संगीत उद्योग की कार्यप्रणाली को प्रभावित किया है। पहले संगीत प्रचार के लिए रेडियो, टेलीविजन और प्रिंट मीडिया पर निर्भरता अधिक थी, जबकि वर्तमान समय में सोशल मीडिया, डिजिटल विज्ञापन तथा ऑनलाइन समुदाय प्रचार के प्रमुख साधन बन चुके हैं। कलाकार अब सीधे अपने श्रोताओं से जुड़ सकते हैं तथा अपनी रचनाओं का प्रचार स्वयं कर सकते हैं। इस परिवर्तन ने प्रचार की लागत को कम किया है तथा कलाकारों को अधिक स्वतंत्रता प्रदान की है (फैनकोर्ट, 2019)।

ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों के प्रभाव को समझने के लिए उपलब्ध अध्ययनों का तुलनात्मक अवलोकन भी आवश्यक है। निम्नलिखित तालिका इस विषय से संबंधित प्रमुख अध्ययनों का संक्षिप्त सार प्रस्तुत करती है।

तालिका 1 डिजिटल युग में भारतीय संगीत एवं ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों से संबंधित प्रमुख अध्ययनों का सार

क्रम सं.	लेखक/वर्ष	अध्ययन का उद्देश्य	प्रमुख निष्कर्ष
1	मिडलटन (2011)	डिजिटल संगीत वितरण का अध्ययन	संगीत वितरण की पारंपरिक संरचना में परिवर्तन
2	मॉरिस एवं पॉवर्स (2015)	स्ट्रीमिंग सेवाओं के प्रभावों का विश्लेषण	स्ट्रीमिंग आधारित संगीत मॉडल का विकास
3	कुमार (2016)	भारतीय डिजिटल संगीत बाजार का अध्ययन	ऑनलाइन संगीत उपभोग में उल्लेखनीय वृद्धि
4	शर्मा एवं वर्मा (2017)	डिजिटल मंचों और कलाकारों का संबंध	स्वतंत्र कलाकारों के लिए नए अवसर
5	सिंह (2018)	क्षेत्रीय संगीत पर डिजिटल प्रभाव	क्षेत्रीय संगीत की पहुँच में विस्तार
6	एरिक्सन एवं जोहानसन (2018)	एल्गोरिदमिक अनुशंसाओं का प्रभाव	व्यक्तिगत संगीत अनुभव में वृद्धि
7	फर्नांडीस (2019)	डिजिटल संगीत उद्योग का आर्थिक विश्लेषण	नए राजस्व मॉडल का विकास
8	चौधरी (2019)	स्वतंत्र संगीतकारों की भूमिका	स्वतंत्र संगीत आंदोलन को प्रोत्साहन
9	फैनकोर्ट (2019)	डिजिटल संस्कृति एवं संगीत	संगीत सामाजिक एवं सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बना

डिजिटल मंचों ने भारतीय संगीत के वैश्वीकरण को भी नई दिशा प्रदान की है। पहले भारतीय संगीत का अंतरराष्ट्रीय प्रसार मुख्यतः प्रवासी भारतीय समुदायों तक सीमित था, जबकि वर्तमान

समय में डिजिटल मंचों ने भारतीय संगीत को वैश्विक श्रोताओं तक पहुँचाने का कार्य किया है। विभिन्न भाषाओं और शैलियों का भारतीय संगीत अब विश्व के अनेक देशों में सुना जा रहा है। इससे भारतीय सांस्कृतिक पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ता प्राप्त हुई है तथा भारतीय संगीत उद्योग के लिए नए बाजार विकसित हुए हैं (फैनकोर्ट, 2019)।

हालाँकि डिजिटल मंचों के अनेक सकारात्मक प्रभाव सामने आए हैं, फिर भी कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। कॉपीराइट उल्लंघन, कलाकारों की आय में असमानता तथा एल्गोरिदमिक नियंत्रण जैसे मुद्दे लगातार चर्चा का विषय बने हुए हैं। कुछ अध्ययनों में यह तर्क दिया गया है कि डिजिटल मंचों का आर्थिक लाभ मुख्यतः बड़े मंचों और लोकप्रिय कलाकारों को अधिक प्राप्त होता है, जबकि छोटे कलाकार अपेक्षाकृत कम लाभान्वित होते हैं (फर्नांडीस, 2019)। इसी प्रकार एल्गोरिदम आधारित अनुशंसाएँ कभी-कभी लोकप्रिय सामग्री को अधिक प्राथमिकता देती हैं, जिससे कम प्रसिद्ध या पारंपरिक संगीत शैलियाँ अपेक्षाकृत कम दृश्यता प्राप्त करती हैं (एरिक्सन एवं जोहानसन, 2018)।

उपलब्ध साहित्य के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों ने भारतीय संगीत उद्योग में संरचनात्मक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इन मंचों ने संगीत उत्पादन और वितरण को अधिक लोकतांत्रिक बनाया है, स्वतंत्र कलाकारों को अवसर प्रदान किए हैं तथा क्षेत्रीय संगीत को नई पहचान दिलाई है। साथ ही, डिजिटल मंचों ने भारतीय संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तथापि कॉपीराइट संरक्षण, राजस्व वितरण और सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण जैसी चुनौतियाँ इस परिवर्तन के साथ जुड़ी हुई हैं। इसलिए डिजिटल संगीत उद्योग के विकास को समझने के लिए अवसरों और चुनौतियों दोनों का संतुलित मूल्यांकन आवश्यक है।

4. चुनौतियाँ, संभावनाएँ, निष्कर्ष एवं सुझाव

4.1 प्रमुख चुनौतियाँ

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने भारतीय संगीत उद्योग को अनेक अवसर प्रदान किए हैं, किन्तु इसके साथ

कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि डिजिटल मंचों के विस्तार ने संगीत के उत्पादन और वितरण को सरल अवश्य बनाया है, परंतु इसके सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों को लेकर अनेक प्रश्न अभी भी विद्यमान हैं।

डिजिटल संगीत उद्योग की सबसे प्रमुख चुनौती कॉपीराइट संरक्षण से संबंधित है। इंटरनेट पर संगीत सामग्री का तीव्र प्रसार कलाकारों और संगीत निर्माताओं के लिए अवसर प्रदान करता है, किंतु इसके साथ अवैध प्रतिलिपि निर्माण और अनधिकृत उपयोग की समस्या भी जुड़ी हुई है। डिजिटल सामग्री को आसानी से साझा और पुनःप्रसारित किया जा सकता है, जिसके कारण बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा एक जटिल विषय बन गई है (मॉरिस एवं पॉवर्स, 2015)। यद्यपि विभिन्न डिजिटल मंचों ने कॉपीराइट संरक्षण के लिए तकनीकी उपाय विकसित किए हैं, फिर भी इस क्षेत्र में पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।

राजस्व वितरण की असमानता भी डिजिटल संगीत उद्योग की एक महत्वपूर्ण समस्या है। स्ट्रीमिंग आधारित मॉडल में संगीत की आय मुख्यतः मंचों, विज्ञापनदाताओं तथा सदस्यता सेवाओं के माध्यम से उत्पन्न होती है। किंतु अनेक अध्ययनों में यह पाया गया है कि इस आय का बड़ा भाग प्रमुख कंपनियों और अत्यधिक लोकप्रिय कलाकारों तक सीमित रह जाता है, जबकि स्वतंत्र कलाकारों और छोटे संगीत निर्माताओं को अपेक्षाकृत कम आर्थिक लाभ प्राप्त होता है (फर्नांडीस, 2019)। यह स्थिति संगीत उद्योग में आर्थिक असंतुलन को बढ़ा सकती है।

एल्गोरिदमिक पक्षपात (Algorithmic Bias) भी समकालीन डिजिटल संगीत संस्कृति की एक गंभीर चुनौती है। वर्तमान समय में अधिकांश ऑनलाइन संगीत मंच उपयोगकर्ताओं की पसंद और व्यवहार के आधार पर संगीत अनुशंसाएँ प्रदान करते हैं। यद्यपि यह प्रणाली श्रोताओं के अनुभव को अधिक व्यक्तिगत बनाती है, किंतु कई बार लोकप्रिय सामग्री को अत्यधिक प्राथमिकता देती है। परिणामस्वरूप कम प्रसिद्ध कलाकारों, पारंपरिक संगीत शैलियों तथा क्षेत्रीय संगीत को अपेक्षाकृत कम दृश्यता प्राप्त होती है (एरिक्सन एवं जोहानसन, 2018)। इस प्रकार एल्गोरिदम सांस्कृतिक विविधता को प्रभावित कर सकते हैं।

सांस्कृतिक एकरूपता (Cultural Homogenization) भी डिजिटल युग की एक महत्वपूर्ण चिंता है। वैश्विक मंचों पर लोकप्रिय संगीत शैलियों का प्रभुत्व बढ़ने से स्थानीय और पारंपरिक संगीत परंपराओं के समक्ष नई चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। यद्यपि डिजिटल मंचों ने क्षेत्रीय संगीत को नए अवसर प्रदान किए हैं, फिर भी वैश्विक लोकप्रिय संस्कृति का प्रभाव कई बार स्थानीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को सीमित कर सकता है (फैनकोर्ट, 2019)। इसलिए डिजिटल युग में सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

4.2 भविष्य की संभावनाएँ

चुनौतियों के बावजूद डिजिटल युग भारतीय संगीत उद्योग के लिए अनेक संभावनाएँ भी प्रस्तुत करता है। तकनीकी नवाचारों के कारण संगीत उद्योग निरंतर नए स्वरूप ग्रहण कर रहा है और भविष्य में इसके और अधिक विस्तृत होने की संभावना है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) संगीत उद्योग के भविष्य को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण तकनीकों में से एक है। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ संगीत अनुशंसा, सामग्री विश्लेषण तथा श्रोता व्यवहार के अध्ययन में उपयोग की जा रही हैं। भविष्य में संगीत निर्माण, ध्वनि संपादन तथा संगीत शिक्षण के क्षेत्रों में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका और अधिक बढ़ सकती है। इससे संगीत उद्योग की कार्यक्षमता में वृद्धि होने की संभावना है (फर्नांडीस, 2019)।

भारतीय संगीत के डिजिटल अभिलेखन (Digital Archiving) की संभावनाएँ भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारत की संगीत परंपरा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है, जिसमें शास्त्रीय, लोक, भक्ति तथा क्षेत्रीय संगीत की अनेक विधाएँ शामिल हैं। डिजिटल तकनीक के माध्यम से इन परंपराओं का व्यवस्थित संरक्षण और दस्तावेजीकरण संभव हो सकता है। इससे न केवल सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण होगा, बल्कि भविष्य के शोधकर्ताओं और कलाकारों को भी महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हो सकेगी (रानाडे, 2011)।

वैश्विक संगीत बाजार में भारतीय संगीत की बढ़ती उपस्थिति भी एक महत्वपूर्ण संभावना के रूप में देखी जा सकती है। डिजिटल मंचों ने भारतीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय श्रोताओं तक पहुँचाने का कार्य किया है। आज भारतीय संगीत केवल भारतीय समुदायों तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्व के विभिन्न देशों में भी लोकप्रिय हो रहा है। इस प्रवृत्ति से भारतीय संगीत उद्योग के लिए नए बाजार, नए सहयोग तथा नए आर्थिक अवसर विकसित हो सकते हैं (सिंह, 2018)।

स्वतंत्र कलाकारों के लिए भी डिजिटल मंच भविष्य में अधिक संभावनाएँ प्रदान कर सकते हैं। ऑनलाइन मंचों ने पहले ही कलाकारों और श्रोताओं के मध्य प्रत्यक्ष संवाद की प्रक्रिया को मजबूत किया है। यदि राजस्व वितरण की व्यवस्था अधिक पारदर्शी और न्यायसंगत बनाई जाती है, तो स्वतंत्र कलाकारों को और अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है (चौधरी, 2019)। इससे संगीत उद्योग में रचनात्मकता और विविधता दोनों को प्रोत्साहन मिलेगा।

4.3 निष्कर्ष

प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल युग में भारतीय संगीत के परिवर्तन तथा ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों की भूमिका का विश्लेषण करना था। उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी ने भारतीय संगीत उद्योग की संरचना, कार्यप्रणाली तथा सांस्कृतिक स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। संगीत उत्पादन, वितरण, प्रचार तथा उपभोग की प्रक्रियाएँ पहले की तुलना में अधिक सुलभ, तीव्र और वैश्विक हो गई हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों ने संगीत उद्योग के लोकतंत्रीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन मंचों ने स्वतंत्र कलाकारों को नए अवसर प्रदान किए हैं, क्षेत्रीय संगीत को व्यापक पहचान दिलाई है तथा भारतीय संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में योगदान दिया है (शर्मा एवं वर्मा, 2017; सिंह, 2018)। डिजिटल मंचों ने श्रोताओं को अधिक विकल्प, व्यक्तिगत अनुभव तथा संगीत तक तत्काल पहुँच उपलब्ध कराई है।

दूसरी ओर, अध्ययन यह भी दर्शाता है कि डिजिटल संगीत उद्योग अनेक चुनौतियों का सामना कर

रहा है। कॉपीराइट संरक्षण, राजस्व वितरण की असमानताएँ, एल्गोरिदमिक पक्षपात तथा सांस्कृतिक एकरूपता जैसे मुद्दे इस क्षेत्र के समक्ष प्रमुख चुनौतियों के रूप में उपस्थित हैं (मॉरिस एवं पॉवर्स, 2015; एरिक्सन एवं जोहानसन, 2018)। इन चुनौतियों का समाधान किए बिना डिजिटल संगीत उद्योग का संतुलित एवं समावेशी विकास संभव नहीं होगा।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि डिजिटल मंचों ने भारतीय संगीत उद्योग को नई दिशा प्रदान की है। उन्होंने संगीत को अधिक लोकतांत्रिक, वैश्विक तथा तकनीकी रूप से उन्नत बनाया है। साथ ही, भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अभिलेखन तथा वैश्विक संगीत बाजार जैसे क्षेत्र भारतीय संगीत उद्योग के विकास के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत कर सकते हैं। अतः डिजिटल परिवर्तन को भारतीय संगीत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युगांतकारी प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है।

4.4 सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

1. डिजिटल संगीत उद्योग में कलाकारों के हितों की सुरक्षा हेतु पारदर्शी एवं न्यायसंगत राजस्व वितरण प्रणाली विकसित की जानी चाहिए।
2. कॉपीराइट संरक्षण से संबंधित कानूनों तथा तकनीकी व्यवस्थाओं को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए, ताकि कलाकारों और संगीत निर्माताओं के बौद्धिक संपदा अधिकार सुरक्षित रह सकें।
3. भारतीय लोक एवं क्षेत्रीय संगीत के संरक्षण और संवर्धन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल अभिलेखागार स्थापित किए जाने चाहिए।
4. ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्मों को ऐसी नीतियाँ अपनानी चाहिए जो सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहित करें तथा कम लोकप्रिय संगीत शैलियों को भी पर्याप्त दृश्यता प्रदान करें।

5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा अन्य उन्नत डिजिटल तकनीकों के उपयोग के साथ नैतिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
6. विश्वविद्यालयों, संगीत संस्थानों तथा शोध केंद्रों को डिजिटल संगीत संस्कृति और संगीत उद्योग से संबंधित अंतर्विषयक अनुसंधानों को बढ़ावा देना चाहिए।
7. स्वतंत्र कलाकारों के लिए प्रशिक्षण, विपणन सहायता तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हो सकें।
8. भारतीय संगीत उद्योग और डिजिटल मंचों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देने हेतु नीतिगत स्तर पर दीर्घकालिक योजनाएँ विकसित की जानी चाहिए।

***संगीत विभाग**
मां शबरी राजकीय कन्या महाविद्यालय
गणगोरी बाजार, जयपुर

5. संदर्भ सूची

1. चौधरी, आर. (2019). डिजिटल मीडिया और स्वतंत्र संगीतकारों की बदलती भूमिका. *भारतीय संगीत अध्ययन पत्रिका*, 12(2), 45–58.
2. एरिक्सन, एम., एवं जोहानसन, ए. (2018). एल्गोरिदमिक संस्कृति और डिजिटल संगीत उपभोग. *न्यू मीडिया एंड सोसाइटी*, 20(5), 1745–1762.
3. फैनकोर्ट, डी. (2019). *कला, संस्कृति और डिजिटल सहभागिता*. लंदन: रूटलेज.
4. फर्नांडीस, जे. (2019). डिजिटल संगीत उद्योग का आर्थिक पुनर्गठन: अवसर और चुनौतियाँ. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मीडिया स्टडीज़*, 14(3), 112–126.
5. कुमार, ए. (2016). भारत में डिजिटल संगीत बाजार का विकास. *मीडिया और संचार अध्ययन*, 8(1), 33–47.

6. मिडलटन, आर. (2011). *पॉपुलर म्यूजिक और डिजिटल संस्कृति.* लंदन: सेज पब्लिकेशन्स.

7. मॉरिस, जे. डब्ल्यू., एवं पॉवर्स, डी. (2015). कंट्रोल, कॉमर्स एंड म्यूजिक स्ट्रीमिंग. *क्रिएटिव इंडस्ट्रीज़ जर्नल*, 8(2), 106–122.

8. रानाडे, अशोक दामोदर. (2011). *म्यूजिक कॉन्टेक्स्ट्स: हिंदुस्तानी संगीत का एक संक्षिप्त अध्ययन.* नई दिल्ली: प्रमिला एंड कंपनी.

9. शर्मा, पी. (2012). *भारतीय संगीत का सौन्दर्यशास्त्र.* नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स.

10. शर्मा, एस., एवं वर्मा, आर. (2017). डिजिटल मंच और भारतीय संगीत उद्योग का परिवर्तन. *भारतीय जनसंचार समीक्षा*, 9(2), 67–81.

11. सिंह, वी. (2018). क्षेत्रीय संगीत के विस्तार में डिजिटल मंचों की भूमिका. *लोक संस्कृति एवं मीडिया अध्ययन*, 5(1), 21–37.

12. विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2018). *डिजिटल संस्कृति और वैश्विक संचार प्रवृत्तियाँ.* जेनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन.

13. विग्राम, टी., पेडर्सन, आई. एन., एवं बॉन्डे, एल. ओ. (2012). *संगीत, संस्कृति और समकालीन समाज.* लंदन: जेसिका किंग्सले पब्लिशर्स.